RESEARCH HUB
International Peer-Reviewed Multidisciplinary E-Journal
ISSN 2582-9173
Website : www.researchhub.org.in/research-hub !! Email : researchhubjournal@gmail.com

जगदंबा प्रसाद दीक्षित के कथा साहित्य में महानगरीय प्रदूषण

प्रा. लक्ष्मण के. पेटकुले
(हिंदी विभागाध्यक्ष)
एस. एन. मोर महाविद्यालय, तुमसर, जि. भंडारा
मो. नं. ९९२१४१४२९८
ई-मेल: lkpetkule1980@gmail.com

सारांश :

दुनियाँ का सबसे भीषण वास्तव है प्रदूषण। मनुष्य ने मानव कल्याण के नाम पर अनेक अविष्कारों को जन्म दिया है। आज इन्हीं आविष्कारों के कारण संपूर्ण जीव सृष्टि खतरे में है। इन्सान ने ऐसा कोई क्षेत्र नहीं छोड़ा है जिससे पृथ्वी को कम नुकसान हो। जल, थल, वायू ध्वनि आदि क्षेत्रों में प्रदूषण बढ़ चुका है जिससे पृथ्वी पर जीव सृष्टि खतरे में है। दीक्षित ने महानगरों में होने वाले प्रदूषण की बात की है।

बीज शब्द : प्रदूषण, परिवर्तन, वायु, जल, ध्वनि, मृदा,सृष्टि, जीवन, बदबू, गंदगी, सड़ांध, धुमिल, प्लास्टिक, कुड़ा, रोग, दूषित

प्रस्तावना :

समकालीन हिंदी साहित्य में जगदंबा प्रसाद दीक्षित का नाम बड़े आदर के साथ लिया जाता है। दीक्षित का जन्म मध्यप्रदेश के बालाघाट में १९३१ में मध्यम वर्गिय परिवार में हुआ। उनकी शिक्षा-दीक्षा कहिं एक जगह पर नहीं हुई बल्की अलग-अलग जगह पर हुई है। उनकी शिक्षा उन्नाव उत्तर प्रदेश में तथा महाराष्ट्र के नागपुर शहर में हुई। शुरू में विभिन्न समाचार पत्रों में उपसंपादक पद पर कार्य किया। और नौकरी हेतु मुंबई जाने के पश्चात वहाँ सेंट जेवियर्स कॉलेज में अध्यापन का कार्य किया। उनकी मृत्यु २०१६ में जर्मनी में हुई।

दीक्षित का कथा साहित्य महानगरों को केंद्र में रखकर ही लिखा गया है। उनकी रचनाओं में 'मुरदाघर', 'अकाल', 'इतिवृत्त', 'कटा हुआ आसमान' आदि उपन्यायों के साथ-साथ 'शुरुआत तथा अन्य कहानियाँ' आदि संग्रह उल्लेखनीय है। जिसमें महानगरीय जीवन को अभिव्यक्त किया है। महानगरीय जीवन गतिशील होता है। हर दिन वहाँ कई प्रकार के परिवर्तन तथा नये-नये अविष्कार होते रहते हैं। इन परिवर्तनों और आविष्कारों के बीच शहरों की गंदी और बदबूदार हवाओं में दम घुटने लगता है। अर्थात पर्यावरण प्रदूषण एक भयंकर समस्या मानव, पशु तथा पक्षियों के सामने खड़ी है। वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण तथा मृदा प्रदूषण आदि प्रश्नों के कारण सभी जीवसृष्टी का जीवन खतरे में आया है। दीक्षित के कथा साहित्य में उपरोक्त सभी प्रदूषणों का चित्रण हुआ है। अपने कथा साहित्य में दीक्षित ने मुंबई जैसे महानगर का चित्रण हुआ है। जिसमें अनेक समस्याऐं परिलक्षित होती है। सबसे महत्वपूर्ण समस्या है। पर्यावरण प्रदूषण। प्रदूषण का अर्थ है – "वायु, जल, मिट्टी का अवांक्षित द्रव्यों से दूषित होना। जिसका सजीवों पर प्रत्यक्ष रुप से विपरीत प्रभाव पड़ता है। तथा पारिस्थितिक तंत्र

को नुकसान पहुँचाता है।[१]

दीक्षित के उथा साहित्य मे महानगरीय सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक समस्याओं के साथ ही पर्यावरण प्रदूषण इस समस्या पर भी प्रकाश डाला गया है। जिसमें वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण और मृदा प्रदूषण का उल्लेख हुआ है। जो निम्मलिखित रूप में हैं।

वायु प्रदूषण :

मानव जीवन के विभिन्न रोगों का कारण है वायु प्रदूषण। वायु प्रदूषण हवा में जहरीली गैस फैलाने से होता है। शहरों में झटपट पैसा कमाने की ओढ लगी हुई है। यह पैसा कमाने के लिए उद्योगी सरकारी नियमों को नजरअंदाज कर कारखानों से निकलेने वाली जहरीली गैस हवा में छोड़ते हैं। यही गॅस शुद्ध हवा को अयुध्द कर इस अशुध्द हवा का शिकार मनुष्य, पशु और प्राणी हो रहे हैं। दीक्षित ने इस अशुद्ध हवाओं को नजर अंदाज नहीं किया बल्कि इसका वर्णन 'मुरदाघर' उपन्यास में किया है। उदा: 'कचरे के ढेर पर घूमघूमकर अब भी ढूंढ रहा है पागल..... एक दुनियाँ..... जिसको ढुँढते हो गया पागल..... नही मिली अब तक। दुनियाँ जिसने कचरा बनाकर फेंक दिया कचरे के ढेर पर फटे हुए कपड़े। जमे हुए मैल की परतें..... और परतें। चिपके हुए बाल। एक पागल जिस्म।..... पंख फड़फड़ाती मुर्गियाँ । दुम हिलाते हुए कुत्ते। गंदे सुअर।..... डिब्बियाँ, ...पन्नियाँ .....जली हुई सिगरेटें। जूठन और गंदगी। थुक और बलगम..... ।[२]

उपरोक्त विवेचन से दीक्षित ने दुषित पर्यावरण की ओर पाठकों का लक्ष केंद्रित किया है। मुंबई जैसी धारवी झोपड़पट्टी में शुध्द वातावरण की कल्पना नहीं की जा सकती। यहाँ रहनेवाला प्रत्येक व्यक्ति मजूर, हमाल, रिक्षा चालक, चोर, जिस्म बेचती औरतें, पाकिटमार आदि लोग ही झोपड़पट्टी के रहिवासी है। इन लोगों में शिक्षा का अभाव है। इनके सामने एक ही प्रश्न उपस्थित रहता है की सुबह और शाम कैसे जलेगा चूल्हा? जगह-जगह कुड़े का ढेर जिसमें हॉटलों का सड़ा हुआ खाना। प्लास्टीक अथवा पन्नियों में बोधकर फेंका जाता है। जिसपर कुत्ते, सुअर, कौए आदि के साथ-साथ इन्सान के बच्चे भी अपनी भुख शांत करने के लिए हॉटलों में रात का बचा हुआ खाना जो कुड़ेदान में डाला गया है। इस सड़े हुए अन्न को खाने के लिए मजबूर है। सड़ा हुआ अन्न, प्लास्टीक, पन्नी, आदि कचरे के कारण वातावरण में गंदी बदबू घुलमिल जाती है जो मनुष्य ने स्वास्थ के लिए बेहद हानिकारक है। लेखक ने इसी समस्या की ओर ध्यानाकर्षित किया है।

जल प्रदूषण :

सभी रोगों का मूल कारण दूषित पानी होता है। गाँव की अपेका शहरों में पानी दुषित मिलता है। शहरों में शुद्ध जल की अपेक्षा करना भी दुश्वार है। इसके पिछे कई कारण है। बढ़ते उद्योग व्यवसाय के चलते कारखानों से निकलता हुआ गंदा पानी सिधा आस-पास के नदी और नालों में छोड़ा जाता है। यही पानी किसी-न-किसी माध्यम से प्रयोग में आ जाता है। जिसके चलते मनुष्य के शरीर में कई प्रकार की बिमारियाँ घर कर बैठते हैं। जिसमें हैजा, डेंग्यू, मलेरिया, अतिसार, कैन्सर स्किन कैन्सर जैसी बिमारियाँ होती है। इस पानी में कारखानों से निकलने वाले पानी में विघातक केमिकल होने के कारण उपरोक्त बिमारियों के शिकार इन्सान होता रहता है। 'मुरदाघर' में दूषित पानी के कारण चमेली नामक वेश्या को दुषित पानी पिने के कारण झाड़ा लग गया है। जो पुलिस स्टेशन में पकड़ी

जाने के कारण गिरफ्त में है पुलिस स्टेशन में पिने पानी शुद्ध नहीं है। अशुद्ध जल पिने के कारण उसे डायरिया हो गया है। पुलिस प्रशासन उसे अस्पताल में ले जाने के लिए भी अनाकानी करते हैं तभी बशीरन जो पेशे से वह भी वेश्या है। गुस्से में आकर उठती है - "अंदर वो छोकरी कू झाड़ा लगा रया है..... करके बुलाया। कारकून कू बोलके उसकू अस्पताल भेजना है।"[३] इस प्रकार दुषित पानी के कारण बिमारियाँ बढ़ती जाती है। मुरदाधर की तरह ही उनकी 'दूसरा अहसास' कहानी में गंदे नालों का उल्लेख किया गया है। उदा: "मैं भी क्यों इसके पिछे होकर यहाँ चला आया? यह एक गंदा नाला है जिसमें लोग नहा रहे हैं।

इस कथन से स्पष्ट है कि नाले के अंदर चमार लोग पशुओं की चमड़ी धोकर नाले सारा पानी गंदा कर दिया है। और लोग इसी पानी से नहाने के लिए विवश है।

ध्वनि प्रदूषण :

ध्वनि प्रदूषण अर्थात, आवाज का निश्चित डेसिबल के उपर होना ध्वनि प्रदूषण कहलाता है। यदि ८० से ९० डेसिबल से आवाज ९५८ चला जाता है तो ध्वनि प्रदूषण की समस्या उत्पन्न हो जाती है। यही आवाज ९५ या १२० डेसिबल हो जाता है तो वह अधिक तीव्र और कष्टकारी हो जाता है। शहरों में मोटार, गाडियाँ, शादियों में बजने वाले डि. जे., कारखानों से निकलने वाला आवाज आदि के कारण श्रवण की समस्या उत्पन्न हो जाती है। दीक्षित ने 'कटा हुआ आसमान' इस उपन्यास में मुंबई शहर के गाडियों की आवाज के कारण ध्वनि प्रदूषण की समस्या को उजागर किया है। उदा: "सड़क पर दौड़ती हुई कारों से नफरत करो। आसमान को छुनेवाली इमारतों से नफरत करो। फुटपाथ पर चिल्लाने वाले फेरी वालों से नफरत करो।"[५]

इस प्रकार दीक्षित ने ध्वनि प्रदूषण का विरोध कर एक स्वस्थ समाज की निर्माण की कामना की है।

उपसंहार :

महानगरों का विकास एक और किया जा रहा है उसी निर्माणाधीन कार्य के कारण वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण और ध्वनि ने प्रदूषण निर्माण हो रहा है। दीक्षित ने इसी समस्या से पाठकों और संपूर्ण जनमानस को प्रदूषण समस्या से अपने कथा साहित्य के माध्यम से सचेत करने का प्रयास किया है।

संदर्भ :

- https://hi.wikipedia.org
- दीक्षित जगदंबा प्रसाद : 'मुरदाघर', राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. ८७
- वही पृ. ७४
- दीक्षित जगदंबा प्रसाद : 'अकाल', 'दूसरा अहसास', राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. ११६
- दीक्षित जगदंबा प्रसाद : 'कटा हुआ आसमान', राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. ८